नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

लोकतांत्रिक विश्व में भारत की बढ़ती भूमिका

नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल देशों के लोकसभा अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के 28 वें सम्मेलन (सीएसपीओसी) का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसदीय लोकतंत्र को लेकर भारत की सोच, उपलब्धियों और भविष्य की दिशा को स्पष्ट शब्दों में सामने रखा. यह संबोधन केवल औपचारिक भाषण नहीं था, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा, उसकी उपयोगिता और बदलते वैश्विक संदर्भ में उसकी जिम्मेदारियों पर एक गंभीर विमर्श था.

प्रधानमंत्री मोदी ने लोकतंत्र को 'केवल शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन पद्धति' बताते हुए उसका अर्थ 'लास्ट माइल डिलीवरी' से जोड़ा. उनका संदेश स्पष्ट था कि लोकतंत्र की सफलता चुनावों तक सीमित नहीं, बल्कि इस बात में निहित है कि उसका लाभ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचे. उन्होंने यह तथ्य रेखांकित किया कि बीते वर्षों में लगभग 25 करोड़ भारतीयों का गरीबी रेखा से बाहर निकलना इसी लोकतांत्रिक डिलीवरी मॉडल का परिणाम है. यह दावा भारत के कल्याणकारी राज्य की उस सोच को रेखांकित करता है, जहां नीति और परिणाम के बीच की दूरी कम करने का प्रयास किया गया है.

प्रधानमंत्री ने भारत की विविधता को लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत बताया. आजादी के समय जिस बहुलता को लेकर शंकाएं व्यक्त की जाती थीं, वही बहुलता आज भारत की पहचान और लोकतांत्रिक स्थिरता का आधार बनी है. भाषा, धर्म, संस्कृति और विचारों की विविधता के बीच लोकतंत्र का निरंतर चलना भारत के राजनीतिक परिपक्वता का प्रमाण है. यह संदेश राष्ट्रमंडल देशों के लिए भी महत्वपूर्ण है, जहां कई राष्ट्र विविधता के प्रबंधन से जूझ रहे हैं. अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने भारत को 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' बताते हुए प्राचीन भारतीय परंपराओं का उल्लेख किया. वेदों और सभाओं की परंपरा का संदर्भ यह दर्शाता है कि सहमति, संवाद और विमर्श भारत की सभ्यतागत चेतना का हिस्सा रहे हैं. यह ऐतिहासिक आत्मविश्वास भारत को केवल एक आधुनिक लोकतंत्र नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों की दीर्घ परंपरा वाला राष्ट्र प्रस्तुत करता है. तकनीक के संदर्भ में प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण व्यावहारिक और भविष्यन्मुखी रहा.

डिजिटल इंडिया, यूपीआई, वैक्सीन उत्पादन और स्टार्टअप इकोसिस्टम का उल्लेख करते हुए उन्होंने भारत की वैश्विक भूमिका को रेखांकित किया. विशेष रूप से ग्लोबल साउथ के लिए ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म बनाने की घोषणा भारत की उस कूटनीतिक सोच को दर्शाती है, जिसमें नेतृत्व साझेदारी और सहयोग के माध्यम से स्थापित किया जाता है, न कि केवल प्रभाव से. हालांकि, प्रधानमंत्री ने नई चुनौतियों से आंख नहीं चुराई. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के साथ गलत सूचना जैसी समस्याओं को उन्होंने लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती बताया. यह स्वीकारोक्ति महत्वपूर्ण है, क्योंकि तकनीक जहां पारदर्शिता और गति लाती है, वहीं भ्रम और ध्रुवीकरण का खतरा भी बढ़ाती है. इन चुनौतियों का समाधान सामूहिक प्रयास और जिम्मेदार संसदीय आचरण में निहित है.

समग्र रूप से, सीएसपीओसी में प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन भारत के लोकतांत्रिक आत्मविश्वास, तकनीकी नेतृत्व और वैश्विक उत्तरदायित्व का संतुलित प्रस्तुतीकरण था. यह संदेश केवल राष्ट्रमंडल तक सीमित नहीं, बल्कि उन सभी लोकतंत्रों के लिए प्रासंगिक है, जो आज परिणाम, विश्वास और विश्वसनीयता की कसौटी पर खड़े हैं.

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश में तेज रफ्तार गाड़ियां ले रहीं हैं जान

दिलीप झा

मध्यप्रदेश सरकार को हादसे रोकने के लिए कारगर कानून लेकर आना चाहिए। पूरे प्रदेश में हर दूसरे और तीसरे दिन बड़े बड़े हादसों में दर्जनों लोगों की जान जा रही है। लोगों के परिवार उजड़ रहे हैं। किसी का बेटा सड़क हादसे का शिकार हो रहा है तो महिलाएं विधवा हो रही हैं। परिवार अनाथ हो रहा है। ऐसे हालात पर कैसे काबू पाया जा सकता है इस पर सरकार को योजनाबद्ध तरीके से काम करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले वाहनों की रफ्तार को धीमा करना अत्यंत जरूरी है। भोपाल में सड़कों पर देर रात कार की रफ्तार विचलित करने वाली होती है। हादसे के पीछे का कारण है नशा। वाहन चालकों की कोई चेकिंग नहीं होती है और वे बेखौफ होकर वाहनों से लोगों को कुचल रहे हैं।

राजधानी की सड़कों पर इन दिनों यातायात के नियमों का धड़ल्ले से उल्लंघन हो रहा है। आरटीओ के कड़े प्रतिबंध के बावजूद 100 प्रतिशत काली फिल्म लगी कारें बेखौफ दौड़ रही हैं। हैरानी की बात है कि वीआईपी क्षेत्रों से लेकर मुख्य चौराहों तक ऐसे वाहनों की आवाजाही बनी हुई है लेकिन आरटीओ और यातायात पुलिस की ओर से इनके विरुद्ध कोई कार्रवाई सुनिश्चित नहीं होती है।

पैदल चलने वालों को भी बख्शा नहीं जा रहा तो सिस्टम और सरकार पर सवाल उठना लाजिमी है। पूरे प्रदेश में ट्रैक्टर-ट्रॉली और पिकअप वैन के चालक अनियंत्रित हैं। शहर की परिधि में तो वाहनों की गति सीमा पर कोई कार्रवाई नहीं होती है। जबकि अन्य राज्यों में इनकी गति सीमा पर नियंत्रण है तो मध्य प्रदेश में क्यों नहीं हो सकता है। पब्लिक की जान की सुरक्षा सरकार का दायित्व है तो इसका निर्वहन भी होना चाहिए।

चाइनीज मांझा से हो रही मौतें

केंद्र और मध्यप्रदेश सरकार को यथाशीघ्र चाइनीज मांझा पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाने का आदेश देना चाहिए। क्योंकि इस डोर की वजह से मध्यप्रदेश समेत पूरे देशभर में पिछले कुछ दिनों में ही दर्जनों लोगों की जान गई और हम बेबस होकर सिर्फ देखते रहे।

महिला कैदी : निरपराध ही भुगत रहे सजा

ओजस्कर पाण्डेय

आमतौर पर भारतीय समाज में ये माना जाता है कि महिलाएं अपराध नहीं करती, ज़्यादातर अपराधों को अंजाम सिर्फ पुरुष देते हैं. अगर कोई महिला किसी अपराध की दोषी पाई भी जाती है तो भारतीय जेलों में भी महिला कैदियों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है. आंकड़ों के मुताबिक पिछले 15 सालों में महिला कैदियों की संख्या में 61 फीसद की बढ़ोतरी हुई है. बावजूद इसके, इन कैदियों के लिए जिन मूलभूत सुविधाओं की ज़रूरत होती है उसमें कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है.

> जानकारी के अनुसार पहली नज़र में तो जेल में महिला क़ैदियों की हालत बहुत अच्छी लग रही थी. सब खुश दिख रहे थे, लेकिन जब उनसे पूछा कि वो किस मामले में अंदर हैं, उनका केस कहां तक पहुंचा हैं, उनके वकील कौन हैं, कितनी बार वकील से मुलाक़ात हुई है, तो वहां मौजूद 90 फ़ीसदी महिला क़ैदियों को अपने केस की जानकारी ही नहीं होती है. महिला एंव बाल कल्याण मंत्रालय की रिपोर्ट में भी इस बात का जिक्र किया गया है कि मां कैदियों के लिए जो सुविधाएं हैं वो पर्याप्त नहीं हैं और उनमें सुधार की जरूरत है. रिपोर्ट में 134 सुझाव दिए गए हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण ये हैं. जिन जेलों में बच्चों के लिए क्रच का इंतजाम नहीं है, वहां ये सुविधा उपलब्ध कराई जाए. जिन महिला कैदियों के बच्चे छह साल से बड़े हैं और देख-रेख करने वाला कोई और नहीं, उन्हें चाइल्ड केयर होम भेजने की जिम्मेदारी भी जेल प्रशासन निभाएगा.

इसी वजह से महिला कैदियों के साथ होने वाले अमानवीय बर्ताव में भी बढ़ोतरी हुई है. महिला कैदियों के साथ होने वाले इस अमानवीय व्यवहार को समझने के लिए हमें दो सवालों पर ध्यान देना होगा. पहला तो यह कि महिला कैदियों की संख्या में इतनी बढ़ोतरी क्यों हो रही है और दूसरा कि मूलभूत सुविधाओं के स्तर पर, जेलों में महिलाएं किस भेदभाव को झेलती हैं? कई बार अपराध महिलाओं से भी हो जाता है, और उन्हें भी सजा होती है. लेकिन अगर महिला अपराधी माँ हो तो उनके बच्चों का क्या होता है? कई बार ऐसा होता है कि महिला कैदी के रिश्तेदार उसके बच्चे को रखने से मना कर देते हैं. या फिर कई बार ऐसा भी होता है कि उनके बच्चों की देखभाल करने वाला ही कोई नहीं होता. हमारे क़ानून में कैदी माँ के लिए कुछ नियम हैं. अगर बच्चा 6 साल या उससे कम उम्र का है तो उसे संभालने के लिए जेल में क्रच बने होते हैं. कैदी माँ अपने बच्चे को वहां रख सकती है. ऐसे बच्चों के लिए जेल प्रशासन सरकार की मदद से क्रच का इंतजाम करता है.

इतना ही नहीं हर जेल में मैन्युअल होता है. महिला कैदियों के लिए भी नियम कायदे होते हैं. आइये जानते हैं क्या हैं वो नियम. भारतीय जेल मैन्युअल के अनुसार गर्भवती महिला कैदियों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. गर्भावस्था और बच्चा पैदा होने के बाद उनको अन्य महिला क़ैदियों से अधिक खाना दिया जाना चाहिए. इतना ही नहीं गर्भवती कैदियों को उनकी सेहत के अनुसार खाना दिया जाना चाहिए. अगर महिला कैदी का बच्चा छह साल या उससे कम उम्र का है तो वो उसे अपने साथ जेल में रख सकती है. जेल मैनुअल में ऐसी महिला अपराधियों के लिए 'मदर सेल' का प्रावधान है जिसमे वो अपने बच्चे के साथ रह सकती हैं. लेकिन मदर सेल में उन्ही महिला अपराधियों को जगह मिल पाती है जिनके परिवार या बच्चों के पिता उन्हें अपनाने से इनकार कर देते हैं.

जेल मैनुअल में इतने प्रावधान होने के बावजूद भी जेलों में महिला कैदियों की दशा दयनीय है खासतौर से उन महिलाओं की जो विचाराधीन कैदी हैं. ज्यादातर महिला कैदियों को जेल मैनुअल की जानकारी ही नहीं है. यहाँ तक कि उन्हें ये भी पता नहीं होता कि उनका केस कहाँ तक पहुँचा. जानकारी के अभाव में कई माँ ऐसी हैं जो कर रही हैं. लेकिन जरूरी नहीं कि वो उन्हें उनके खोये हुए बच्चो से मिलवा पाएं.

बच्चे भगवान का रूप होते हैं, उनकी मुस्कराहट को ईश्वर की कृपा माना है. बच्चों के चंचल स्वभाव के कारण उनकी हर गलती को आनंद का हिस्सा माना जाता है. ऐसे बेनुगाह फितरत वाले चार मासूमों को मानो वसीयत में ही जेल मिली है. कारागार में बंद चार महिलाओं के साथ उनके मासूम बच्चे भी यहां पल रहे हैं. इनमें से स्कूल भी जाता है, जिसका सारा खर्च और जिम्मेदारी जेल प्रशासन उठाता है. उत्तर प्रदेश में इस समय करीब 432 बच्चे मां के साथ सजा काट रहे हैं. इनमें से अधिक दहेज के मामले में सजा काट रही हैं. कुछ मामले हत्या का है.

अब प्रश्न है कि इन महिलाओं के साथ बच्चे जो मां के साथ जेल में रह रहे इन बच्चों का जाने की किस गुनाह की सजा मिल रही है. इनसे मिलने न तो उनके परिजन आते हैं और न ही सगे संबंधी. जेल में बंद अन्य महिलाएं उन्हें अपना दुलार लुटाती हैं. जेल के अन्य कैदी ही बच्चों को प्यार करती हैं तो कोई उनके साथ खेलता है. जेल के कर्मचारी उनकी चंचलता पर मोहित होकर कभी नए कपड़े तो कभी खिलौने दे जाते हैं. बच्चों की स्थिति पर केंद्र ने भी मांगी रिपोर्ट नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार जेलों में महिला बंदियों की संख्या अधिक है.

अपनों ने घेरा : गोमांस पर पूर्ण प्रतिबंध कब

इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से अब तक 24 लोगों की मौत का मामला अभी थमा नहीं है। पूरे प्रदेश में दूषित जल को लेकर लोगों में जबरदस्त आक्रोश है और वे सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन कर रहे हैं। दूषित पानी को लेकर पूरे प्रदेश के नगर निगम और नगरपालिका दोनों की कार्यशैली पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। दरअसल यहां मनमानी और धक्केशाही चरम पर है। ये आधुनिक और पारदर्शी तरीके से इन संस्थानों को चलाना ही नहीं चाहते हैं। लोगों का कहना है कि शिकायत पर जल्दी सुनवाई करने में निगम की रुचि नहीं है। इस बीच भोपाल के स्लॉटर हाउस में गोमांस की बिक्री को लेकर पूरे प्रदेश के लोगों में आक्रोश है। हालांकि यहां गोमांस की बिक्री दशकों से हो रही है। किसी सरकार ने गोमांस की बिक्री रोकने की जहमत नहीं उठाई। वहीं, इस मसले पर महापौर मालती राय को हटाने के लिए कांग्रेस संभागायुक्त को पत्र लिखने जा रही है। इतना ही नहीं, मालती राय अब अपनों से भी घिरने लगी हैं। नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने मालती राय और निगमायुक्त संस्कृति जैन पर यह कहकर हमला बोला है कि स्लॉटर हाउस के संचालक के खिलाफ एफआईआर क्यों नहीं किया गया, यह एक गंभीर सवाल है। वहीं, इस मसले को लेकर गत दिनों भोपाल हिंदू संगठनों ने जोरदार प्रदर्शन कर सरकार को चेताया कि गो वंश की हत्या रोकने के लिए कड़ा कानून बनाए जाए।

किशन सूर्यवंशी

मालतीय राय

कांग्रेस को क्यों चाहिए बसपा का सहयोग

उत्तरप्रदेश विधानसभा का चुनाव 2027 में होगा, जिसके लिए अभी से राजनीतिक हलचल शुरू हो गई है. स्पष्ट है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बीजेपी ने खुद को काफी मजबूत कर लिया है तथा प्रधानमंत्री मोदी का निर्वाचन क्षेत्र भी वाराणसी है. अयोध्या और काशी विश्वनाथ में हुए निर्माण कार्यों और विकास ने जनता का दिल जीता है. कानून व्यवस्था में पहले की तुलना में सुधार हुआ है. ऐसी स्थिति में विधानसभा चुनाव जीतना बीजेपी नेतृत्व के एनडीए के लिए कोई बड़ी बात नहीं है. इतने पर भी प्रमुख विपक्षी दल के रूप में सपा की अपनी मजबूती कायम है, लेकिन कांग्रेस हाशिये पर पड़ी है. सपा ने पिछली बार भी कांग्रेस के लिए काफी कम सीटें छोड़ी थीं. अब ऐसे आसार हैं कि सपा अकेले लड़ेगी, क्योंकि उत्तरप्रदेश में अखिलेश यादव जितना महत्व रखते हैं, उतना राहुल गांधी नहीं ! इस दौरान कांग्रेस नेता अविनाश पांडे ने मायावती की पार्टी बसपा को इंडिया गठबंधन में शामिल होने का न्योता दिया है. पिछले 2 वर्षों में बसपा का प्रभाव कम हुआ है. पिछले 2022 के विधानसभा चुनाव तथा 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी के वोट शेयर में काफी गिरावट आई है. इतने पर भी कांग्रेस मानती है कि यूपी में बसपा के दलित वोटों का सहयोग लिए बिना बीजेपी को हराया नहीं जा सकता. कांग्रेस का अपना संगठन भी उत्तरप्रदेश में कमजोर है. कांग्रेस नेता मानते हैं कि सपा पर निर्भर रहने की बजाय बसपा से सहयोग करना सामाजिक दृष्टि से भी उपयोगी होगा. इससे कांग्रेस की दलित हितैषी छवि बनेगी. मायावती की सोशल इंजीनियरिंग की वजह से ऐसे ब्राह्मण वोट भी साथ में आ सकेंगे जो योगी शासन में ठाकुरों के बढ़ते वर्चस्व से स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं. दूसरी ओर मायावती भी दलित-मुस्लिम गठजोड़ के लिए प्रयासरत हैं. यूपी की आबादी में दलितों व मुस्लिमों की तादाद 39 प्रतिशत है.

कांग्रेस नेता अविनाश पांडे ने मायावती की पार्टी बसपा को इंडिया गठबंधन में शामिल होने का न्योता दिया है. पिछले 2 वर्षों में बसपा का प्रभाव कम हुआ है. पिछले 2022 के विधानसभा चुनाव तथा 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी के वोट शेयर में काफी गिरावट आई है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सत्ता के लिए कुर्सी की हाय-हाय कोई नहीं करता इसे बाय-बाय

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, एक वक्त ऐसा था जब बादशाहों को अपना तख्त प्रिय था, जबकि आज हर नेता को कुर्सी प्यारी लगती है. कुर्सी की मादकता में खुद को जनसेवक कहने वाले नेता सत्ता के स्वामी बन जाते हैं. कुर्सी पाने के बाद उसे बचाए रखने की चिंता लगी रहती है.'

हमने कहा, 'कुर्सी तो हर घर और ऑफिस में रहती है. उसमें कौन सी अनोखी बात है? पहले कुर्सी लकड़ी की होती थी अब मेटल की होती है. कंप्यूटर पर काम करने वालों की कुर्सी पहिएवाली हुआ करती है. बुजुर्गों के लिए इजी चेयर या आराम कुर्सी रहती है. कुर्सी कैसी भी हो, उसके पाए मजबूत रहने चाहिए. कुर्सी में हत्थे लगे रहने से कुहनी और कलाई टिकाई जा सकती है. कुर्सी क्लर्क की भी होती है और साहब की भी!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, छोटी कुर्सी वाला हमेशा बड़ी कुर्सी पाने की चाहत रखता है. इतिहास की

समूची कालसूची स्वर्णमंडित कुर्सियों की लोलुप आकांक्षाओं से भरी पड़ी है. अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबिसार को बंदी बनाकर स्वयं का राजतिलक करवाया था. कुर्सी के लिए सम्राट अशोक ने अपने भाइयों को मौत के घाट उतार दिया था. कंस ने अपने पिता उग्रसेन को तथा औरंगजेब ने अपने अब्बा शाहजहां को जेल में डाल दिया था.'

हमने कहा, 'लोकतंत्र में कुर्सी पाने की होड़ बढ़ गई है. चुनाव संगीत कुर्सी का खेल बन गए हैं, जिसमें चालाक नेता जल्दी से लपककर कुर्सी पर बैठ जाते हैं और खुद को निर्विरोधनिर्वाचित बताते हैं. कुर्सी पर बैठते ही कुछ नेता तानाशाह के समान मदमस्त आचरण करने लगते हैं. व्हाइट हाउस की सफेदी से ट्रंप का दिल नहीं भरा, इसलिए अब वह ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहते हैं. ईरान पर भी टूट पड़ने का उनका इरादा है. वह यह नहीं समझते कि जब समय प्रतिकूल हो जाता है, तो सत्ता का पावर मुट्ठी में भरी रेत के समान खिसक जाता है. कुर्सी किसी की सगी नहीं होती. कल उस पर कोई और था, आज दूसरा विराजमान है, भविष्य में कोई और बैठेगा. यह है किस्सा कुर्सी का !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12144 - डॉ. सागर खादीवाला

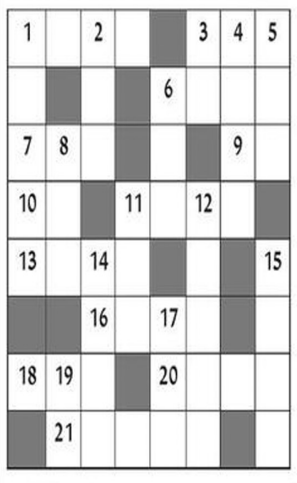

ऊपर से नीचे

1. महात्मा गांधी का जन्मस्थान 2. प्रविष्ट, शामिल, भीतर घुसा हुआ (उर्दू) 3. कथन, कहना, उपदेश 4. देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता 5. बूंद (उर्दू) 6. दक्षिण बिहार का प्राचीन नाम 8. नष्ट, बर्बाद (उर्दू) 11. जलता या दहकता हुआ कोयला 12. कृषक, किसान 14. रत्न, मणि 15. कपोत, एक प्रसिद्ध पक्षी जो पालतू और जंगली दो तरह के होते हैं 17. भोज का निमंत्रण, बुलावा (उर्दू) 19. वैद्यक के अनुसार शरीर की वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं, वायु, हवा

बाएं से दाएं

1. खजानची, खजाने में रुपये परखने वाला 3. रह-रह कर होने वाली पीड़ा, टीस 6. योग्यता, काबिलियत, सामर्थ्य, विद्वता (उर्दू) 7. भारत का एक राज्य 9. कैद, काला, कारागार 10. भाव, गुफा, विदारण 11. तम, अंधेरा 13. विवाह आदि अवसर पर रात भर जागना 16. भीषण या विकट दुर्घटना, दंगा-फसाद 18. साक्षी, गवाही देने वाला 20. न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से जिरह करना, वकील का पेशा 21. भीगा हुआ, आर्द्र (उर्दू)

Solution 12143

चो	र	द	र	वा	जा	■	■
च	■	र	ज	त	प	ट	■
ला	य	क	■	■	क	मा	न
■	था	ना	■	ढ	■	ट	स
अ	र्थ	■	ल	ल	का	र	ना
पा	■	उ	प	ना	म	■	■
हि	सा	ब	■	■	का	बि	ल
ज	■	रा	ह	■	जी	ना	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ मेंशिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आकस्मिक धन लाभ का योग है, वर्ष के मध्य में व्यापार में लाभ प्राप्त होगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में शारीरिक कष्ट होगा, मित्रों से व्यर्थ विवाद होगा, स्थानान्तरण का योग है, मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ में मित्रों का विवाद हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियों का शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मानसिक तनाव रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान चतुर चंचल मिलनसार और परोपकारी होगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. निर्णय लेने में अग्रणी एवं सक्षम होगा. किसी के अधिनस्थ कार्य करना पसंद नहीं करेगा. जातक का भाग्योदय जन्म स्थान से दूर होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

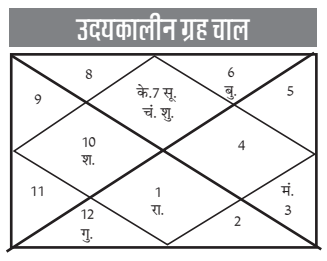

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2082 माघ कृष्ण चर्तुदशी शनिवासरे रात 11/53, मूल नक्षत्रे दिन 8/27, व्याघात योगे रात 9/55, विष्टि करणे सू.उ. 6/42, सू.अ. 5/18, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

माघ कृष्ण चर्तुदशी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, धातु, मोती, पुखराज, जौ, चना, अलसी, तिल, गुड़, खांड़ रूई, कपास में वृद्धि होगी. वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनिट से 25 मिनिट के बने रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 3723 है.

मेष- कार्यक्षेत्र विस्तृत होगा. व्यवसायिकबाधायें दूर होंगी.जीवनसाथी का कार्य अच्छा और सहयोगी रहेगा. पारिवारिक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृषभ- कानूनी मामलों में समय का ध्यान रखें, नौकरी में उत्साहवर्धक सफलता मिलेगी. दैनिक कार्य में यश प्राप्त होगा. प्रियजनों से विवाद को टालना हितकर रहेगा.

मिथुन- सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा, नए संबंध बनेंगे, अनुभवों का लाभ मिलेगा. शुभ समाचार प्राप्त होंगे. मान सम्मान में वृद्धि होगी. मनोबल बना रहेगा.

कर्क- पुरूषार्थ का प्रतिफल मिलेगा, धैर्य आपको उन्नति की पराकाष्ठा पर ले जायेगा. वाद विवाद से दूर रहें. आकस्मिक लाभ का योग प्रबल है.

सिंह- आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी. विरोधियों से सतर्क रहें, जल्दबाजी में कार्य न करें. अभीष्ट की प्राप्ति होगी. नौकर चाकरों का सहयोग प्राप्त होगा.

कन्या- परिवार में शुभ कार्यों का निर्णय होगा. मानसिक अस्थिरता दूर करें. पुराना कार्य बनने का योग है. शुभ सूचना प्राप्त होगी. प्रापर्टी संबंधी कार्यों से बचना चाहिये.

तुला- आपने कार्यों को समय पर पूरा करने का प्रयास करें, मनोरंजन में समय व्यतीत होगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. घरेलू विवादों की अनदेखी न करें.

वृश्चिक- पारिवारिक दृष्टि से दिन मध्यम रहने की संभावना है. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- मान प्रतिष्ठा में कमी आयेगीं खर्च बढ़ने से पैसों का इंतजाम करना होगा. धार्मिक कार्यों में लगन रहेगी. सम्मान में वृद्धि होगी. संयम रखें.

मकर- व्यापार व्यवसाय मध्यम रहेगा. नई योजनाओं का श्रीगणेश होगा. अतिथि वृश्चिकमन का योग है. संपत्ति संबंधी विवादों का समाधान होगा.

कुम्भ- भौतिक सुख साधनों में रूचि बढ़ेगी. विरोधियों से सतर्क रहकर कार्य करें. आय व्यय में संतुलन रहेगा. कार्यों में रूचि रहेगी.

मीन- व्यापार लाभदायक रहेगा. परिवार में सुख शांति रहेगी. सामाजिक सम्मान मिलेगा. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा. मनोंवांछित सफलता प्राप्त होगी.

SUDOKU 7276

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7275

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4